बैसाखी के दिन
नवजीवन का सन्देश

वचन सत्संग हजूर सन्त कृपालसिंह जी महाराज

(सत्संदेश मई, 1969 में प्रकाशित प्रवचन)

महापुरूष जब-जब भी दुनिया में आते हैं, वह एक ही बात को बार-बार पेश करते हैं, वह क्या ? कि मानुष जन्म बड़े भागों से मिलता है। इसमें हम अपने घर वापस जा सकते हैं। किसी समय हम प्रभु की गोद में थे। जबसे आए हैं, वापस नहीं गए। नहीं तो किसी और रंग में होते। इन्सान और परमात्मा में क्या फ़र्क है ? इन्सान के साथ मन लगा है। मन न हो तो यह वही है। ''कहु कबीर इह राम की अंश।'' आत्मा की जाति वही है जो परमात्मा की जाति है। It is a drop of the ocean of All-Consciousness. (परमात्मा महाचेतनता का सागर है तो आत्मा उसकी बूंद है) सिर्फ़ मन साथ लग गया तो वह जीव बन गया। परमात्मा जमा मन है इन्सान। अगर मन निकल जाए तो यह परमात्मा है। प्रभु की अंश है ना ! जैसे सोना हो, या सोने का गहना हो। वह जो सोना है, Ore (खनिज़) जो है, मिट्टी निकल जाए तो सोना ही सोना है। मन-इन्द्रियों के विकार निकल जाएं तो यह (इन्सान) परमात्मा है। मानुष जन्म में हम क्या कर सकते ? जड़ से चेतन को अलग कर अपने आपको अनुभव कर सकते हैं। हमारी आत्मा मन के साथ लगकर जीव बन रही है, जिस्म और जगत के साथ लगकर उनका रूप बन रही है। नतीजा क्या है ? जहां आसा तहां वासा।'' अगर यह आज़ाद हो जाए इससे तो अपने घर जा सकती है, अपने आपको पा सकती है।

जिस इन्सान ने अपने आपको पा लिया वह प्रभु में अभेद हो गया। He is man in God or God in man. एक ही ज्योति प्रभु की सारे संसार का आधार बन रही है। वह अपने आप में क्या था ? न ज्योति था न श्रुति था, न Sound न Light. जब वह व्यक्त हुआ तो दो चीजें बनीं, ज्योति और श्रुति। अगार हमारी आत्मा, जो बूंद है, उस लहर के साथ, God into expression Power (करण कारण प्रभु सत्ता) के साथ लग जाए, तो जहां से लहर उठी है, उसमें समा जाए। यह उपदेश है जो हमेशा महापुरूष देते रहे हैं।

तो तरह-तरह से समझाने का यत्न किया है, और बात कुछ नहीं। हरेक चीज अपने असल की तरफ़ जाना चाहती है। आत्मा परमात्मा की अंश है, वहीं जाएगी। दीवा जगाओ। उसको उलटा भी रखो तो उसका शोला ऊपर ही जाएगा क्योंकि उसका स्रोत्र, सूर्य, ऊपर है। मिट्टी के ढेले को कितना ही ज़ोर से आसमान की तरफ फेंको फिर ज़मीन पर आएगा। क्योंकि उसका स्रोत्र ज़मीन, नीचे है। तो आत्मा अगर आज़ाद हो जाए मन-इन्द्रियों से, तो बेअख्तयार प्रभु की ओर जाएगी। तो उसके लिये क्या करना होगा ? पहले मन को खड़ा करना होगा।

योगश्चित्त वृत्ति निरोध:

चित्त वृत्ति का निरोध — योग की ज़मीन बन गई। योग, युज धातु से निकलता है जिसके मानें हैं जुड़ना। यही काम करना है। और यह काम हम मनुष्य योनी ही में कर सकते हैं। बाकी योनियों में नहीं, क्योंकि बाकी सब भोग योनी हैं ! मानुष जन्म कुछ भोग योनी है पिछले कर्मों के अनुसार और कुछ स्वतंत्र है। इसमें आकाश तत्व प्रबल है। यह सत्-असत् का निर्णय कर सकता है। अपने आपको जान सकता है, प्रभु को पा सकता है।

आज बैसाखी का दिन है। वैसे बैसाख का महीना भी कई तरह से हरेक समाज में मनाया जाता है। नेचर के लिहाज़ से इस महीने पेड़ पौधों में नई कोंपलें निकलनी शुरू हो जाती हैं, इसमें एक नई जिन्दगी आगाज़ का (शुरूआत) होता है, यह कहो। तो हमें भी आज के दिन कुछ नया सबक लेना चाहिये। क्या ? जिससे नई कोंपले फूटें। हिन्दू भाइयों में दस अवतार होते हैं ना। उनमें कहते हैं आज के दिन परशुराम का अवतार हुआ था। प्रहलाद भक्त थे। उनके पिता हिरण्यकश्यप थे। वह यह चाहते थे कि मेरी पूजा हो। प्रहलाद उसकी पूजा नहीं करता था। कई तरह से उसको दुख दिए। उसकी रक्षा वह भगवान करता रहा। तो आज वह दिन है जिसमें लोहे का खंभा लाल करके प्रहलाद को उस पर लगाया जाना था कि वह मर जाए। प्रहलाद ने देखा, उस खंभे पर कीड़ी चल रही थी। तो क्या हुआ, नरसिंह अवतार प्रकट हुए, प्रहलाद को बचाया, हिरण्यकश्यप को मारा, जिसको वर मिला था कि न आसमान पर मरे, न ज़मीन पर मरे, न अन्दर मरे, न बाहर मरे। तो खंभे में प्रकट होकर हाथों पर लेकर उसे मार दिया। तो हिन्दू भाइयों के लिये दो महत्व हैं इस दिन के। एक तो परशुराम ने इस दिन जन्म लिया, दूसरे नरसिंह अवतार ने प्रहलाद की रक्षा की हिरण्यकश्यप को मारकर।

बौद्ध लोगों के लिये भी आज का दिन बड़ा मुबारिक है। बैसाखी के दिन ही महात्मा बुद्ध का जन्म हुआ, बैसाखी के दिन ही उनको आत्मज्ञान हुआ और बैसाखी के दिन ही उनका निर्वाण हुआ। दोनों समाजों के लिये ही आज का दिन बड़ा मुबारक है। हमारे लिये तो है ही। हम रोना रोते हैं कि नया जीवन शुरू हो, हमारे लिये भी नया दिन हो, नई जिन्दगी हो, जिसमें फूल पड़ें, फल लगें, शाख फलों से लदकर झुककर ज़मीन के साथ लग जाए। आज का दिन सिख भाइयों के लिये भी बड़ा भारी दिन है। असल में सिख कोई मत नहीं मेरा यह विश्वास है। शायर कहता है ज़माना बदलता है मगर मर्द वह है जो ज़माने को बदल देता है। आज के दिन, दशम गुरू साहब हुए जिन्होंने यह खालसा पंथ, सिख पंथ जारी किया। आज का दिन पहला दिन था इसका। क्या किया उन्होंने ? पहली बात, कि लोग जात-पात के झगड़ों में थे, उनको मिटाया। यह पहली बात उन्होंने पेश की जो महापुरूष हमेशा पेश करते रहे। गुरू नानक साहब से पूछा गया कि तुम कौन हो ? तो उन्होंने कहा —

न मैं हिन्दू, न मुसलमान, अल्लाह राम के पिंड प्राण।

अर्थात् अल्लाह राम एक ही है। आखिर तुम हो कौन ? तो कहा —

हिन्दू कहां ते मारिए मुसलमान भी नाहिं। पांच तत्त का पुतला नानक ग़ैबी खेले माहिं।

मैं कहता हूं मैं हिन्दू हूं, तो तुम मुझे मारोगे। तुम्हारी नज़र मेरे जिस्म पर लगी हुई है, लेबल पर। और जिसको, खाली बाहर लेबल को, शकलों बनावटों को, तुम मुसलमानी समझते हो, वैसा मुसलमान भी मैं नहीं। पांच तत्वों का यह शरीर है। ग़ैब की (अदृष्य की) ताकत जो इसमें खेल रही है वह मैं हूं। दशम गुरू साहब ने बड़ा निर्णय किया है इसका। शुरू तो वही किया, हमने समाजों के लेबल लगाए हैं, मगर हम हैं इन्सान। जिस समाज का लेबल लगाया वैसे कहलाए, इतने समाजों में उलझ गए कि इन्सानियत को भूल गए। आगे हम चेतन स्वरूप आत्मा हैं और एक ही कन्ट्रोलिंग पावर है जो हमको इस जिस्म में कायम रख रही है। तो शदम गुरू साहब ने समाजों का, राफ़ज़ी अमाम साफ़ी यह वह, सबका ज़िक्र करते हुए कहा, ''मानुष की जाति सब एके पहचानिबो।'' सबको एक से अधिकार परमात्मा ने दिये हैं। पैदा सब एक ही तरह से होते हैं। कबीर साहब को ब्राह्मणों ने चैलेंज किया कि हम ब्रह्मा के मुख से आए हैं। महात्मा बड़ी साफ़गोई करते हैं। तो कहते हैं -

ए ब्राह्मण तू ब्राह्मणी जाया, आन बाट काहे नहीं आया।

कि अगर तू समझता है कि तुझको परमात्मा ने ख़ास हकूक (विशेष अधिकार) दिए हैं तो किसी और रास्ते से पैदा होता। तो सारे इन्सान एक ही तरह से पैदा होते हैं, 9 महीने माता के पेट में रह कर। एक ही बनावट है, बाहरी और अन्तरी। किसी के चार हाथ तो नहीं, दो ही हैं। ''एको नैन एको कान।'' दशम गुरू साहब ने इस बात पर बहुत ज़ोर दिया है कि इन्सान-इन्सान सब एक हैं। सबको एक से हकूक परमात्मा ने दिए हैं। ऊंच-नीच, जैसे कर्म किए उसके अनुसार बनते हैं। तुलसी साहब कहते हैं।

कर्म प्रधान विश्व रचि राखा। जो जस करहि तसहि फल चाखा।

आपको मालूम है वाल्मीक कौन थे ? शुद्र थे ना ! क्या बने ? महर्षि। क्यों बने ? अगले ज़मानों में कर्म के अनुसार Change होता था (जात बदलती थी)। आजकल ब्राह्मण का बेटा ब्राह्मण, क्षत्री का बेटा क्षत्री। आगे कई जातें-पाते शुरू हो गई, जंजीर दर जंजीर पड़ती चली गई। भूल गए कि हम इन्सान हैं। तो आज के दिन दशम गुरू साहब ने पांच प्यारों को चुना। असल में जमाने के हालात थे ऐसे - उनसे हमारा ताल्लुक नहीं। लोगों को दोस्त-दुश्मन की तमीज़ नहीं थी। उन्होंने कहा कि कोई ऐसा काम करें कि लोग महसूस करें कि मेरी तालीम का क्या हशर है ? उन्होंने कहा, मुझे सीस चाहिये। जी-जी करने वाले तो बहुत मिलेंगे, मत्था टेकने वाले भी मिल जाएंगे। पैसा देने वाले भी मिल जाएंगे। मगर जान देने वाला कहीं कहीं मिलेगा। तो एक निकला उनमें से। उसको मारा नहीं। फिर एक और निकला। इस तरह पांच निकल आए। उनको प्यारा बनाया - जो जात-पात से ऊपर थे। इन्सानियत को जिसने कबूल किया कि मैं इन्सान हूं। उनको फिर अपनी ज्योति दी। ज्योति से ज्योति जगती है ना ! उनको ख़ालसा बनाया। ख़ालसा की तारीफ़ क्या दी ?

ख़ालसा मेरो रूप है ख़ास, ख़ालसा में हौं करूं निवास।
ख़ालसा मेरो संयम सूरा, ख़ालसा मेरे सत्गुरू पूरा।

जो मुझे कभी नहीं छोड़ सकता, ''आद, मध्य जो अन्त निबाहे, सो साजन मेरा मन चाहे।'' खालसा की निशानी दी है कि खालसा क्या है ?

पूरण ज्योति जगे घट में, ताहिं नखालस ताहिं जानो।

लेबल लगाने से नहीं बनता। उनको Enthuse किया (ज्योति दी)। फिर, जब यह

कर दिया तो आपको पता है क्या किया ? बड़ी भारी बात की। उनको अमृत छकाया, सब को, ख्वाह वह किसी जात-पात के थे - थे तो इन्सान ना ! यह जातें-पातें तो हमने बनाई हैं, ''जात-पात पूछे नहीं कोई, हरि को भजे सो हरि का होई।'' उन्होंने किसी समाज के कैदी नहीं बनाये। उन्होंने बनाए -

वाहेगुरू का ख़ालसा वाहेगुरू की फ़तेह।

हे परमात्मा ! मैं तेरा हूं। I am thine O Lord ! किसी समाज की जय नहीं बुलाई। तो खालसे की तारीफ़ दी गई, जीवित ज्योति है जिसमें, दीवे से दीवा जगता है। यह सामर्थ्य की, Competency की बात है। और यही नहीं किया, उनको (पांच प्यारों को) अमृत छकाया और आप भी उनके हाथों से अमृत छका। This is his greatness (यह बड़ाई थी)। हरेक महात्मा ने शागिर्द बनाए, बुद्ध ने बनाए, हज़रत मोहम्मद ने बनाए, इशु-मसीह ने बनाए। बुद्ध ने शिष्य बनाए, उनकी हैसियत शिष्यों की रही, उनको बुद्ध नहीं बनाया। इशु-मसीह ने खाना खाया शिष्यों के साथ, मगर लोग उन्हें मसीह नहीं मानते। हज़रत मोहम्मद ने चार यार बनाए, खलीफ़ा तो बनाया उनको, पैग़म्बर नहीं बनाया। बड़ी साफ़गोई मैं कर रहा हूं, It is a very frank talk.

दशम गुरू साहब ने कहा, खालसा मैं ही हूं। आप अमृत छका उनसे। यह उनकी बड़ाई थी। वक्त की ज़रूरत के मुताबिक उन्होंने वालन्टियर कोर बनाई। मगर हिन्दू-हिन्दू रहते हुए जानें कुर्बान कर गये। भाई नन्दलाल थे। उनकी वाणी को खिताब मिला, जिन्दगी नाम, जिन्दगी देने वाली। उसकी वाणी पढ़ो, होश आ जाती है। बड़े गुरू भक्त थे। वली खां, नबी खां थे। मुसलमान होते हुये जाने कुरबान कर दीं। बाहर तैयार हैं लोग। वली खां की घर वाली पूछती है, गुरू साहब का क्या हाल है ? भई तेरा पति मारा गया। कहती है गुरू साहब का क्या हाल है ? कितनी कुरबानी है ? तो सवाल था जिन्दगी का। तो उन्होंने (दशम गुरू साहब ने) क्या कहा ? ''जागत ज्योति जपे निस बासर।'' हम जागती ज्योति के पुजारी हैं, उसी एक नूर के। यह जात-पात के भेद-भाव हमारे बनाए हुए हैं। सारे महापुरूषों ने यही बात पेश की। मौलाना रूम साहब फरमाते थे।

यक हकीकत जल्वागर दर कुफ्रो इस्लामस्तो बस।
इख्तलाफ़ाते मज़ाहब जुम्ला औहामस्तो बस ।

काफ़िर (नास्तिक) हो या मोमिन (आस्तिक) सबमें एक ही हकीकत है। आत्मा तो

वही है ना ! वही परमात्मा सबके घट में है। सबको एक से हकूक मिले हैं। मज़हबों के भेद-भाव हमारे व्यक्तिगत वहमों का नतीजा है। मैं एक मिसाल दूं। पहले अद्वैत बना, ''एको ब्रह्म द्वितीयो नास्ति।'' एक ही ब्रह्म है दूसरा कोई नहीं। फिर Qualified हो गया, अद्वैत भी कई बन गए। जिसने जितना-जितना पाया उसने अपना मार्ग चला दिया, है तो एक ही ना।

अव्वल अल्ला नूर उपाया कुदरत के सब बन्दे।
एक नूर ते सब जग उपजिया कौन भले को मन्दे।

यह बात समझने वाली है। लेबल लगाकर किसका ख़ालसा बनाया भई। परमात्मा का। तो मैं अर्ज़ कर रहा था दशम गुरू साहब की बड़ाई थी कि आप ही ज्योति दी, Enthuse किया और आप ही अपने बराबर बना दिया, कि जहां पांच प्यारे होंगे वहां मैं हूं। जो वह कहें ठीक है। जागते पुरूष के पास बैठोगे तो जागोगे ना। एक जागता पुरूष मिल जाए होश आ जाए, पांच मिल जाएं तो क्या कहना ! सिस्टम तो बहुत अच्छा है Constituents (अंग) नहीं मिलते, मुश्किल यह है। उन्होंने एक गुरू घर बनाया जिसमें सब बराबर थे। किसी को यह चिन्ता न थी हम खाना कहां से खाएंगे, कपड़ा कहां से पहनेंगे, हमारे बच्चे कौन पालेगा ? सब बराबर थे। सब सेवा करो। मगर साथ ही यह कहा, ''जगत ज्योति जपे निस बासर।'' हम जागती ज्योति के पुजारी हैं। हम ज्योति के ही हैं ना। मिसाल देते हैं, जैसे चिंगारियाँ उठती हैं ना, वह आग की होती हैं, फिर उसी में समा जाती हैं। हम चिंगारियाँ हैं जागती ज्योति की।

A drop of the Ocean of All consciousness.

परमात्मा महाचेतना का समुद्र है, तो हम बूंदें हैं उस समुद्र की। हर चीज़ अपने असल की तरफ़ जाती है। हम ज्योति स्वरूप आत्मा हैं। यह (आत्मा) वापस अपने घर जाएगी, मगर बंधन में है। इतनी मन-इन्द्रियों के साथ लम्पट हो गई है कि परदेस से निकलने को जो नहीं करता। तो एक हस्ती आई। उसने (दशम गुरू साहब ने) एक नई ज़िन्दगी का आग़ाज (शुरूआत) किया, जिसको सब महापुरूषों ने पेश किया। आखिर क्या किया ? समाजें सब लेबल हैं, जो हमने लगाए हैं। मानुष जाति सब एक है। आत्मा की जाति वही है जो परमात्मा की जाति है। यह लेबल समाजों के हमने लगाए हैं। उत्तम-नीच हमने बनाए हैं, परमात्मा ने नहीं बनाए। तुलसी साहब कहते हैं, जैसे जैसे कर्म किए किसी ने

वैसा-वैसा वह कहलाया।

फिर मैं अर्ज करूं वाल्मीक शूद्र से महर्षि बन सकता है, मीराबाई रविदास चमार के यहां जा सकती है ज्ञान पाने को, तो ऊंच-नीच का सवाल कहां है ? मैं घड़ी बेचने लगूं, घड़ी साज बन गया, कपड़ा बेचने लगूं, बजाज बन गया - हूं तो इंसान ना ! यह भेद-भाव उन्होंने मिटाए अमली तौर पर। यह बड़ा भारी काम किया उन्होंने। परम्परा को तोड़ना मामूली काम नहीं। तालीम तो वही है। गुरू नानक साहब ने, कबीर साहब ने, और और महापुरूषों ने इसी बात को पेश किया। रविदासजी ने कहा, ''ओ बापन नाहिं किसी को भावन को हर राजा।'' वह किसी के बाप का माल लिया हुआ नहीं है, जो भाव-भक्ति करे, उसका है। ''सबसे उत्तम गिनो चण्डाला, जाके मन बसे गोपाला।'' जिसके अन्तर वह प्रभु प्रगट है वह सबसे उत्तम है। अनुभवी पुरूष इसी बात को पेश करते रहते हैं।

दशम गुरू साहब ने अमली तौर पर यह मिसाल पेश कर दी। पांच प्यारे बनाए। सब एक। एक गुरू घर, जिसमें सब बराबर। किसी को फिकर नहीं मेरे बच्चे कौन पालेगा ? यह Ideal अगर आज बन जाए, और बन सकता है, तो Set हो जाए न सिलसिला। मगर अनुभवी लोगों की कमी के कारण नहीं हो रहा। मैं यहां कहूं, मेरा शुरू से यह ख्याल था कि यहां पर एक ही लंगर हो। जो यहां रहने वाले हैं सब वहीं रोटी खाएं। मगर वह चला नहीं माफ़ करना। फिर अपना-अपना होता है ना। एक ही तरह सब Develop (विकसित) नहीं होते। तो आज वैसाखी के दिन ख़ालसा बनाए गए थे। मगर ख़ालसा की वह तारीफ़ नहीं जो आज बनी है। जिसके अन्तर ज्योति जगे वह खालसा। फिर यहां तक कहा -

राज करेगा खालसा बाकी रहे न कोय। ख्वार होय सब मिलेंगे, बचे शरण जो होय।

जो शरण में आएंगे वह बच जाएंगे, बाकी नहीं। तो खालसा कौन ? शकल का खालसा नहीं। जो रूहानी पुरूष है, जिसमें परमात्मा प्रगट है। आखिर उनही का राज होगा, Spiritual Men का। जो उनकी शरण में आएंगे, बच जाएंगे। बाकी ख्वार होंगे। अर्थ क्या होते हैं, कर क्या देते हैं। ज़ात-पात, ऊंच-नीच का उन्होंने ख्याल नहीं किया। फिर उनमें ज्योति जगाई कि हम सब एक हैं। आम गुरू, गुरू बना रहता है, शिष्य, शिष्य ही रहता है। वह कहते हैं, नहीं, हम सब एक हैं। हमारे हजूर फ़रमाया करते थे, ''कोई बादशाह यह नहीं चाहता कि उसका लड़का वज़ीर बने।'' बड़ी Frank

talk मैं अर्ज़ कर रहा हूं। हरेक बादशाह चाहता है उसका बच्चा बादशाह बने न कि वज़ीर। क्यों साहब ? कोई सन्त यह नहीं चाहता कि मेरे बाद आने वाला सन्त न बने। मानवता के नाते और आत्मा के नाते हम एक हैं। जो कन्ट्रोलिंग पावर है, ''कर्ता -करीम ओही, राज़क-रहीम ओही।'' राज़िक (दाता) भी वही रहीम भी वही, उसे कर्ता कह लो करीम कह लो। ''पूजा नमाज़ ओही।'' पूजा करते हो, ज्योति जगाते हो ना ! नमाज़, कानों पर हाथ देकर बांग देते हो। यहां (दो भ्रु मध्य आंखों के पीछे) बैठकर बांग सुनो। अनुभवी लोग कानों पर हाथ रख लेते हैं। यहां बांग (नाद) सुनो।

गुरू नानक साहब शीराज़ गए। वहां काज़ी रूकनुद्दीन मिले। कहने लगे, तुमने खुदा का घर देखा होगा ? कहने लगे, हां। शरीर का वर्णन किया है। कहने लगे, उसके 12 बुर्ज हैं। 6 हाथों के और 6 पांवों के जोड़। बावन किंगुरे हैं, बत्तीस दांत और बीस नाखुन। उसमें दो खिड़कियां लगी पड़ी हैं (आंखों की)। ''उच्चे ख़ासे महल दे बांगां दए खुदा।'' बात समझे ? मस्जिद क्या है ? इसमें माथे की शक्ल की महराब है। गिरजे लम्बूतरे नाक की शकल के हैं। मन्दिर गुंबददार, सिर की शकल पर हैं। अरे भई, Body is the Temple of God. ''इह शरीर हरिमन्दिर है, जिसमें सच्चे की ज्योति।'' सारे महापुरूष यह कहते हैं। मौलाना रूम साहब ने फ़रमाया, ज़रा दिल पर हाथ रख कर सुनने वाली बात है। कहते हैं, ''मस्जिदे कोरां ज़े आबोगिल बवद।'' जिनकी आंखें नहीं खुली हुई उनकी मस्जिदें मिट्टी और पानी की बनी हुई हैं। और, ''मस्जिदे साहब दिलारां दिल बवद।'' जो साहिबे दिल हैं, जाग्रत पुरूष हैं, उनकी मस्जिद यह दिल है। मैं West (पश्चिम) में गया तो मैंने उनसे कहा कि क्राइस्ट कहता है, God does not reside in temples made of stones. कि परमात्मा ईंट पत्थर के बने मकानों में नहीं रहता। उसने आप बनाया है मकान रहने को, इन्सान, उसमें वह रहता है। यह ईंट पत्थरों के मकान उसी के (मानव शरीर के) नमूने पर बाहर हमने बनाए हैं। हम बाहर के इन नमूनों की ज्यादा कद्र करते हैं, असल को छोड़ देते हैं। जाग्रत पुरूष आकर हमें यह पेश करते हैं।

नकली मन्दिर मस्जिदों में जाए सद अफ़सोस है।
कुदरती मस्जिद का साकिन दुख उठाने के लिये।

यह नमूना था बाहर समझाने के लिये कि ऐसी ज्योति तुममें है, ऐसा नाद तुम्हारे अन्दर हो रहा है। अन्तर में जाकर देखना था। अन्दर वाला भूल गया, बाहर लकीर की

फ़कीरी रह गई। बाहर छिल्के को पकड़ कर बैठ गए गूदे का पता ही नहीं। पूजा करने का मतलब है ज्योति जगाओ, यह करो वह करो। यह नेक कर्म जरूर है, पहला कदम है, मगर जब तक अन्तर ज्योति न जगे काम नहीं बनता। मेरे अर्ज़ करने का मतलब है कि हरेक चीज़ अपने असल की तरफ़ जाना चाहती है। यह (आत्मा) अभी दुनिया से ही विरक्त नहीं हुई। उपनिषद कहते हैं, ''वह कौन सी चीज़ है, जिसको पाकर फिर किसी और चीज के पाने की जरूरत नहीं रहती ?'' क्यों साहब, वह कौन सी चीज़ है ? आत्मा चेतन स्वरूप है, जब तक महाचेतन प्रभु से नहीं मिलेगी उसको कभी सन्तुष्टि नहीं होगी। मन कभी काबू नहीं होगा जब तक नाम से, परिपूर्ण परमात्मा से नहीं मिलेगा, ''नाम मिले मन तृप्तिये।'' भगवान कृष्ण के जीवन में आता है कि उन्होंने यमुना नदी में छलांग मारी। नीचे हजार मुंह वाला सांप था। वंशी बजाते हुए उसका नथन किया। वह सांप कौन था ? मन, जिसके हजार तरीके हैं ज़हर चढ़ाने के। उसको जीतना है। ''मन जीते जग जीत।'' हमारे और उस प्रभु की प्राप्ति के बीच कोई रूकावट है तो वह मन की है।

गर तो दारी दर दिले खुद अज़्मे रफ्तन सूए दोस्त।
यह कदम बरनफ़्से खुद ने दीगरे दर कूए दोस्त।

अगर तुम अपने दिल में प्रभु के पाने का पक्का इरादा रखते हो तो एक कदम अपने मन पर रखो अर्थात् इसे खड़ा करो। दूसरा कदम जो तुम उठाओगे प्रभु की गली में पहुंच जाएगा। यही कुरान शरीफ़ कहता है, ''अरबहु नफ़सहू व अरबहू रबहू।'' जिसने अपने नफ़्स को पहचान लिया उसने पहचान लिया अपने रब को। यह तालीम सबकी है। एक नूर आता है। समाजों में प्रकट होता है। तालीम - जो उसको मिलते हैं पा जाते हैं। जब वह (जाग्रत पुरूष) चले जाते हैं, उनकी समाजें बन जाती हैं। जब तक आमिल (अनुभवी) लोग रहते हैं, काम बनता रहता है, उनकी कमी होने से अधोगति हो जाता है। आज कोई कामन ग्राऊंड नहीं, सांझी धरती नहीं, जहां पर सारे मिलकर इस बात को खोलकर पेश करें। समाज वाले बैठे हैं अपनी समाज को लेकर। बुनियादी (मूलभूत) तालीम है, Truth is one for all. कि सत्य सबके लिये एक है। यह नहीं कि हिन्दू का खुदा और है, मुसलमान का खुदा और है। वह रब्बुल-आलमीन (सब दुनिया का प्रभु) है, न रब्बुल हिन्दू है, न ख्बुलसिख है, न रब्बुलईसाई न रब्बुलमुसलमीन।

मैं पढ़ा करता था मिशन स्कूल में, नवीं जमात में - पेशावर की बात है। किताब लेकर

शाही बाग़ में पढ़ने के लिये जा रहा था तो एक आदमी मुझे मिला, दरबारी लाल। अभी तक नाम याद है मुझे। कहने लगा, मैंने शाही बाग जाना है, बताओ कहां है ? मैंने कहा शाही बाग इसी जगह का नाम है जहां तुम खड़े हो ? कहने लगा मैं आया था कि हिन्दुओं का खुदा रो रहा था कि मुसलमानों के खुदा ने मुझे मारा है, मेरी टांग तोड़ दी है। मैं शाही बाद के पास जाना चाहता था इसका फैसला कराने। बात हंसी की है। हमने खुदा हिन्दुओं का और बना रखा है, मुसलमानों का और बना रखा है। और उसको देखा नहीं। Rise above that level and understand what is what. (इससे ऊपर आकर समझो बात क्या है)।

तो दशम गुरू साहब ने बड़ी साफ़गोई की है। इशारे दिए हैं महापुरूषों ने, मगर इतने खुले तरीके से किसी ने पेश नहीं किया। उनका पिछला जीवन (खुद उन्होंने इशारा दिया) आता है, ''हेम कुण्ट परबत है जहां।'' वह जगह भी मैंने देखी है, वहां गुरूद्वारा भी अब बन गया है। सप्त श्रृंग, सात पहाड़ियां हैं, वहां आस-पास, बड़ी रमणीक जगह है। कहते हैं, वहां मैंने बड़ी तपस्या की। तपस्या करके मैं दो से एक रूप हो गया। आनंद में बैठा था। हुक्म हुआ जा बच्चा, जाना है। कहते हैं, ''चित्त न भयो हमरो आवन को।'' हमारा जी नहीं करता था आने को। कहते हैं, ''ज्यों त्यों कहि के मोहि पठायो।'' जा बच्चा, जाना है। कहते हैं, महाराज क्या हुक्म है ? कहते हैं, जितने आगे गए उन्होंने अपना-अपना नाम जपाया, मेरा नाम नहीं जपाया। तुम जाओ, पेश करो कि परमात्मा है। उनसे पूछा तुम कौन हो ? तो कहते हैं -

मैं हूं परम् पुरख का दासा, देखन आया जगत तमासा।
मोहि दास तवन का जानो, या में भेद न रंच पछानो।

फिर आगे कहते हैं -

जो मोको परमेस्वर उचरें, सो सब नरक कुण्ड में पड़ें।

जो प्रणाली बन गई थी ना, कि परमात्मा किनारे हो गया, वह बीच में आप आ गए, यह सब से बड़ी बग़ावत थी जो खुले तौर से इस बात को दशम गुरू साहब ने पेश किया। और महात्मा कभी नहीं कहते, मैं गुरू हूं। भई गुरू कैसे - एक किरण आई, सूरज की किरण। उसने बताया, किरण से मिल जाओ तो सूरज से मिल जाओगे। मगर किरण सूरज तो नहीं हो सकती ना ! वाणियों में आता है (महापुरूषों के बारे में) वह परमात्मा ही

का रूप हैं। वाकई बात यह है। किरण ही किरण की खबर दे सकती है। और कौन देगा ? एक किरण ने सारा जहान बनाया। ''एको कवाओ तिसते होय लख दरियाओ।'' परमात्मा कौन है, कौन जान सकता है ? गा-गाकर लोग हार जाते हैं।

गावे को ताण, होवे किसे ताण। गावे को दात, जाने नीसाण।
गावे को गुण वडियाई आचार। गावे को विद्या बिखम विचार।
गावे को साज करे तन खेह। गावे को जीह लए फिर देह।
गावे को जापे दिसे दूर। गावे को देखे हादरा हदूर।

उसका बयान नहीं, उससे जो चीज़ें बनीं उसका बयान है। ''कथना कथी न आवे तोट, कथ-कथ कथी कोटि कोटि।'' सारे महापुरूष उसको बयान कर कर हार गए। आखिर, 'नेति नेति।' कहकर रह गये। वह बयान नहीं हो सकता। ''सदियों फिलासफी की चुनां ओ चुनीं रही, मगर खुदा की बात जहां थी वहीं रही।'' Unsaid (अकथ) का Unsaid (अकथ) ही रहा। तो महापुरूष आते हैं। आज का दिन है, जब दशम गुरू साहब ने तैयार किया, आगे कहां तक चला, न चला, यह अलेहदा बात रही, मगर सिस्टम तो है। तो जो बनेगा वही दूसरों को Guide करेगा (मार्ग दर्शन करेगा) जागृत पुरूष ही दूसरों को जगायेगा। अंधा अंधे को लेकर चलेगा तो दोनों गड्ढे में ही गिरेंगे ना ! जिसके अन्तर में ज्योति का विकास है, वही दूसरों को ज्योति देगा। और इस पर तालीम दी -

होय एकत्र मिलो मेरे भाई, दुविधा दूर करो लिव लाई।

मिलकर बैठो। World Fellowship of Religions (विश्व धर्म संगम) का मतलब क्या है ? बुनियाद क्या है ? मिल बैठो। क्या फर्क है ? कोई है ? इंसानों की शकल है, सबके दो हाथ, दो पांव-पैदा भी एक ही तरह से होते हैं, पेट में भी एक ही तरह से रहते हैं। वही बनावट है, बाहरी भी, अन्तरी भी, मगर हैं चेतन स्वरूप आत्मा। और वही कन्ट्रोलिंग पावर सबके अन्तर में है। पैदा होते हुये तुम कौन हो ? क्यों साहब ? कभी सवाल किया ? कभी नहीं। इंसान हो ना ! सिख, हिन्दू, मुसलमान तो पीछे बने कि पहले ? इस भूल से निकालने के लिये महापुरूष आते हैं। तो क्या करो ? इकट्ठे कैसे बैठो ? कहते हैं -

हर नांवें की होवो जोड़ी, गुरमुख बैठो सफ़ा बिछाई।

प्रभु के नाम पर मिल बैठो। आखिर किसी को मानते हो ना ! नहीं भी मानते तो

इंसानियत को तो मानते हैं। चलो कम्यूनिस्ट ही बन जाओ। तो भी इंसान की बेहतरी तो चाहते हो ना ! मिल बैठो। किनके पास ? किसी जागृत पुरूष के पास। ''गुरूमुख बैठो सफ़ा बिछाई।'' किसी Awakened पुरूष की सोहबत में बैठो। बात समझे ? आज बैसाखी का दिन है। हमारी नई जिन्दगी का आग़ाज़ (आरंभ) होना चाहिये। दिल से सब फ़र्क मिट जाएं। भगवान कृष्ण ने इशारा दिया है, ''मेरे उस निज रूप पर ध्यान दो।'' आज हम भगवान कृष्ण को याद करते हैं। मेरे पास एक भाई आए। कहने लगे, गीता में कहीं यह नहीं लिखा कि मेरा ध्यान करो। वह कहते हैं, सिर्फ उसका ध्यान करो। यह क्या बात है ? मैंने कहा, यही बात समझने वाली है। ''मेरे उस निज रूप का ध्यान करो,'' वह कहते हैं। आखिर एक ही का Manifestation (व्यक्त रूप) हैं, अवतार और सन्त। बिजली एक ही है। कहीं आग जलाती है, कहीं बरफ़ जमाती है। Phases (पहलू) हैं ना। उन्होंने (भगवान कृष्ण ने) कहा, ''कालो अस्मी।'' यह सब खाए हुए हैं (मेरे) इस तरफ़ कदम उठाओ। दशम गुरू साहब ने कहा, ''कालहू के काल महाकालहू के काल हो।'' उन्होंने (भगवान कृष्ण ने) कहा, ''मेरे निज रूप का ध्यान करो।'' बात वही है। तृगुणातीत हो। अनुभवी पुरूषों की कमी से यह सारे भेद-भाव बने हैं। मैंने जो विश्व मन्दिर बनाया है। उसमें पहले लिखा है - सबसे आगे -

यह हकीकत जल्वागर दर कुफ्रो इस्लामस्तो बस।
इख्तलाफ़ाते मज़ाहब जुमला अवहामस्तो बस।
अज़ तास्सुब कासए शेख़ो-ब्राह्मण शुद जदा।
वरना दर मैख़ाना यह साकी, ओ यक जामस्तो बस।

तास्सुब और तंगदिली के कारण भाई भाई के प्याले जुदा हो गए, वरना एक ही नशा है प्रभु का। तो बात यह है कि हम सब जागती ज्योति के पुजारी हैं, चाहे किसी समाज में हों। Light एक ही आ रही है। मुख़तलिफ़ समाजों में महापुरूष आए। जो उनसे मिले वह कॉलेज में दाखिल हो गए। जब तक अनुभवी पुरूष रहे काम चलता रहा, नहीं तो तंगनजरी का सामान बन गया। मस्जिद भी खुदा का घर है, गुरूद्वारा भी खुदा का घर है। हज़रत मोहम्मद साहब के पास ईसाई लोग आए कि हमें गिरजे के लिये जगह चाहिये। उन्होंने आधी मस्जिद उन्हें दे दी। आज कोई दे सकता है ? सोच लो आप। जो हमारे बड़ों ने किया, क्या हम वह करने को तैयार हैं ? गुरू हरगोबिन्द साहब ने क्या किया ? गुरूद्वारे बनवाये, मन्दिर बनवाये, साथ मस्जिदें बनवाईं। पुराने मकान हैं न

शहरों में, वहां साथ मन्दिर है, साथ मस्जिद है, साथ गुरूद्वारा है। श्री अमृतसर साहब की बुनियाद मियां मीर साहब से रखाई गई। जब भ्रम उठ गया, कहां का हिन्दू, कहां का सिख है ? यह तो हमने बनाए।

यह Ultimate goal (परम् लक्ष्य) है भई। बाकी रहा पहला कदम - इंसान Social being (अर्थात् मिल-जुलकर रहने वाला प्राणी) है। कोई न कोई समाज बनाकर रहेगा, नहीं तो Curruption (भ्रष्टाचार) फैल जायेगी। इसलिये जिस समाज में हो, उसमें रहो, या नई समाज खड़ी करो। आगे सात सौ कितनी समाजें हैं, और नई समाज बनाने की क्या जरूरत है ? हमारे हजूर से कहा गया कि महाराज, आप नई समाज खड़ी करो। कहने लगे, कुंए आगे ही कई पड़े हैं, नया कुंआ खोदने की क्या जरूरत है ? लाहौर की घटना है। एस.पी.एस.के. हाल, शाह आलमी दरवाजे के बाहर एक नास्तिक ने सारे मजहब वालों को दावत (निमंत्रण) दी कि तुम साबत करो कि मजहब की जरूरत है ? बड़ा दिलचस्प मज़मून था। मैं भी गया, अगली कतार में बैठा था। सारी समाजों वालों ने बाहरी चिह्न को साबित किया। हिन्दू भाई ने बोदी चोटी साबित की। ईसाई ने Annointment साबित की, सिख भाई ने पांच कक्के साबित किए, बुद्धों ने अपने चिह्न चक्र।

वह नास्तिक उठा। कहने लगा, भाइयों ! शादी करनी है। मतलब यह कि ईष्ट को सामने रखकर, जिसको तुम मानते हो, पवित्र हाथों द्वारा, भाई हो, मुल्ला हो, पण्डित हो, पादरी हो, सौ-दो-सौ के बीच आकर कह दिया कि आज से इनका सम्बन्ध जायज़ है। यही है ना ! रस्म एक हो या दूसरी, क्या फर्क पड़ता है ? इस प्रकार की दो चार मिसालें देकर उसने सब पर पानी फेर दिया। मैं आगे बैठा था। मैंने कहा, भाई साहब ! अगर आपके हमखयाल दस-बीस हजार आदमी हो जाएं तो एक सोसायटी बनाओगे कि नहीं ? फिर उसके कायदे-कानून रखोगे, देखोगे यह कानून ठीक नहीं फिर उसे बदलोगे या नए कानून डालोगे। जिससे बचना चाहते हो वही समाज बनाने लगे हो। यह अगर अपनी-अपनी समाज में रहें - पहला कदम तो ठीक है ना ? दूसरा कदम, जो आत्मा और कोई और पावर है उसको जानने के मुतल्लिक, वह उठाएं। वह कहने लगा, आप ठीक कहते हैं। वह नास्तिक था, मगर जब तक मैं लाहौर में रहा, वह मिलता बड़े प्यार से। तो मेरे कहने का मतलब है यों ही गलतफहमियां बनी पड़ी हैं। यह सत् की जगह है, सच्ची बात बनी होनी चाहिये कि नहीं ? इस में किसी की निन्दा नहीं, Truth is Truth (सच सच ही है)।

एक नूर ते सब जग उपजिया कौन भले को मन्दे।

कर्मों के अनुसार कोई ऊंचा है, कोई नीचा। जिसने अनुभव को पा लिया उसकी सोहबत करो, Right understanding (सही-नजरी) को पा जाओ। वह क्या ? कि एक ही तरह से पैदा होते हैं सब। कोई किसी को शक है ? कोई ज्यादा है कोई कम बना है - वह भी आगे तरक्की कर सकता है। वाल्मिक कौन थे ? डाकू थे। तो कर्म प्रधान है। आत्मा उस प्रभु की अंश है। मन के साथ लगी पड़ी है, जीव बन रही है। मस्जिदें मुबारिक, मन्दिर मुबारिक, गुरूद्वारे मुबारिक, गिरजे मुबारिक, यह नमूने बाहर समझाने के लिये बनाए गए थे। इनमें जाकर हमने इस बात को Practically (अनुभव रूप में) समझना था कि यह शरीर हरिमन्दिर है जिसमें दाखिल होकर हमने उस प्रभु को पाना है। मैंने अभी अर्ज़ किया यह - मन्दिर, मस्जिद वगैरह - उन लोगों के लिये हैं जिनकी आंख अभी नहीं खुली। जिनकी आंख खुली है उनके लिये शरीयत (बाहरी रस्म-रिवाज) नहीं, उनके लिये यह शरीर हरिमन्दिर है, Body is the temple of God.

हम सब एक ज्योति के पुजारी हैं, ''जागत ज्योति जपै निस बासर,'' हम जागती ज्योति के पुजारी हैं, कहते हैं उस ज्योति के सिवाय किसी और को प्रमाण न करो। बड़ी साफ़ बात। अनुभवी पुरूष हमेशा एक होते हैं। हज़रत मोहम्मद साहब आए, वह वसीला (माध्यम) बने प्रभु को पाने का। परमात्मा ने जब चाहा 'मैं एक से अनेक हो जाऊं' तो दो Phases (सूरतें) बने, एक ज्योति एक श्रुति। वह परमात्मा जयोति स्वरूप है, वह श्रुति है। वह (व्यक्त प्रभु सत्ता) लहर है, वह (अवक्त) समुद्र है। लहर उभार में आई, यह संसार बन गया। हम उसके कतरे (बूंदें) हैं। हमारी जाति वही है जो परमात्मा की जाति है। मन के साथ लगे पड़े हैं। मानुष जन्म पाकर ही हम Self-Analysis करके (अर्थात् चेतन को जड़ से अलग करके) अपने-आप को अनुभव कर सकते हैं, प्रभु को पा सकते हैं। और ख़ालसा लोगों का राज होगा, ''पूर्ण ज्योति जगे घट में ताहि खालसा ताहि नख़ालस जानो।'' रूहानी पुरूषों का राज होगा, जिसकी आंख खुली है, Who have inner eyes to see what is what. आंख खुली वाले के पास बैठो तुम्हारी भी आंख खुल जाएगी। जिनकी आंख बंद है, उनके पास बैठने से क्या होगा ? अंधा अंधे को लेकर चले दोनों गड्ढे में गिरेंगे। (यहां पाठी ने शुरू किया, 'एक ओंकार सतगुरू प्रसाद, रामकली महला चौथा,' जिस पर महाराज जी ने यह वचन कहे) वह परमात्मा जिसको हम एक करके बयान करते हैं, वह एक है नहीं, एक किसी चीज को बोध कराता है, ''एक

कहूं तो है नहीं दूजा कहूं तो गारि।'' हम Finite (सीमाबद्ध) हैं, Finite Terms सीमित परिभाषा में बयान करेंगे ना ! ''तू बे अन्त हौं मित कर वरणूं क्या जानूं होय कैसो रे।'' इस लिये कहा, ''एक ओंकार सत्गुरू प्रसाद'' और, ''सत्गुरू दृड़ाय इक एका।'' बात समझे ? जो सत् का स्वरूप हो गया, वह उस एक का, जिसका ज्योति और श्रुति Manifestation (प्रकट स्वरूप) हैं, उसकी प्रतीति कराता है, उससे जोड़ देता है।

रे मन ऐसो कर सन्यासा।

मन को उपदेश दे रहे हैं, हे मन ! ऐसा संन्यास कर। संन्यास क्या ? जिसमें आसा-मनसा सुन्न हो जाए। घरबार छोड़ने का नाम संन्यास नहीं भाई। Be desireless, कामना विहीन हो जाओ, कोई कामना न रहे। The very silence sprouts forth into light and the very silence becomes vocal (अर्थात् चुप की ज़मीन बने तो ज्योति का विकास होता है, अन्तर नाद का अनुभव प्राप्त होता है)। चुप की ज़मीन बनाओ। कैसा संन्यास करो ? आगे कहते हैं।

बन से सदन सबै कर समझो, मन ही माहिं उदासा।

घर को जंगल समझो। रात जंगल ही है ना। सो लो। जिनकी रातें बन गई, वह बन गए, जिनकी रातें बिगड़ गई वह बिगड़ गए। जिस विद्यार्थी ने रातें जागकर पढ़ाई की वह आलम (विद्वान) बन गया, जिस पहलवान ने रातें वर्जिश में गुज़ारीं वह पहलवान बनकर सामने आ गया। जो भक्त रातें जागकर रोते-चिल्लाते रहे प्रभु के लिये, वह भगवान बन गए। शाम अंधेरा पड़ने से दिन चढ़ने तक जिसका समय कंट्रोल में है, वह इंसान बन सकता है। हम क्या करते हैं ? खाना-पीना यह वह, हला-हला ग्यारह-बारह बज जाते हैं, खर्राते लेकर सो जाते हैं। गुरू साहब कहते हैं, ''रात कस्तूरी वंडिये,'' कस्तूरी बांटी जाती है, जो जागता रहे वह ले ले। जिनकी आंखें बंद हैं वह क्या लेंगे। दिन को काम करो, रात को जंगल समझो। जिसका लेना-देन है, प्रभु ने जोड़ा है, खुशी से पालो। रात को छुट्टी कर दो। प्रभु की याद में, उसकी गोद में सो जाओ। घर बार छोड़कर जंगल जाने की जरूरत नहीं। रात को जंगल समझो। सब घरबार को छुट्टी कर दो। प्रभु की याद में लीन हो जाओ। यह संन्यास बता रहे हैं। आज से हम ऐसा करना शुरू कर दें हमारी जिन्दगी बदल जाए।

यह किताबों में लिखी हुई चीज़ें पड़ी रह जाती हैं। जानना काफ़ी नहीं दिमागी तौर

पर, उसको Live करना है, जिन्दगी में ढालना है। रात जंगल है। दिन को काम करो, अपने जीवन से फायदा उठाओ। जिस गरज़ के लिये मानुष देह मिली है, रोज देखो कहां तक उस मकसद को पाया है। हर रोज़ देखो कहां तक उस मकसद को पाया है। हर रोज़ बैठो और पड़ताल करो। डायरी रखने का मतलब बड़ा ऊंचा था, हमने समझा नहीं। देखो, दिन भर मैंने क्या किया है ? जरा नज़र डालो अपने आप पर कि मैं कहां जा रहा हूं। जो चीज़ें रूकावट बनती हैं उस मकसद को पाने में, उन्हें दूर करो। चुन-चुन कर अपनी त्रुटियों को निकालो।

A strong man revels in his strength and a weaker man wonders how he got it. (अर्थात् एक पहलवान ताकत के नशे में झूमता है और कमजोर आदमी हैरान होता है कि उसमें इतनी ताकत कहां से आई)। पहलवान जब बन जाता है तो सारी दुनिया देखती है कि यह किंगकांग बन गया, दारा बन गया, रूस्तम बन गया। वह एक दिन में नहीं बना भई। रातें जाग जागकर बना है। बड़े प्यार से समझा रहे हैं कि घर को जंगल समझो। जंगल मैं जाएं तो घरबार को छुट्टी हो जाती है ना ! लेना देना खुशी से निभाओ। कर्मों के अनुसार प्रभु ने जोड़ा है, ''कर्मी वहे कलम।'' (उसकी कलम हमारे कर्मों के अनुसार चलती है)।

जत की जटा योग को मज्जन, नेम के नखुन बढ़ाओ।

सुनार की जटा होती है ना ! जत का मतलब है जीवन की पवित्रता, Chastity of life, उसकी जटा बनाओ। ब्रह्मचर्य की रक्षा जिन्दगी है, उसका पात करना मौत है। उस पर मकान बनेगा, उसकी दीवारें रेत की न हों। तुम जी सकोगे। तुम्हारा दिल-दिमाग साबत रहेगा। बड़ी भारी कीमती चीज है। सूखी रोटी खाते रहो तो किसी टॉनिक की जरूरत नहीं। पहली बात है, योग की जटा बनाओ। आप कहेंगे फिर गृहस्थी क्या करें ? गृहस्थी की भी मर्यादा है, शास्त्रों में लिखी है। एक फर्ज (कर्त्तव्य) उसमें बाल बच्चों का पैदा करना भी है, सारे फर्ज नहीं। हमने गलत समझा है। यह विषय विकारों की मशीन नहीं (गृहस्थ जीवन)। संयम का जीवन बनाओ। एक दो बाल-बच्चे हो गए, उनको पालो, बनाओ। आप बनो। और सारे मिलकर प्रभु को पाओ। फिर कहते हैं योग का मज्जन करो। मज्जन कहते हैं स्नान को। प्रभु से जुड़ना है तो सबको, दुनिया को, निकाल दो। नहाने धोने का मतलब है बाहर की मैल धोना। योग युज धातु से निकला है, इसका मतलब है जुड़ना। जब हटोगे सब तरफ से, तभी उससे जुड़ोगे ना। यही स्नान

करना है। बड़े तरीके से समझा रहे हैं।

ता न शोई दस्त अज दुनिया मयावर यादे-हक।
के दर शरीयत नेस्त जायज़ बेवजू कर्दन नमाज।

जब तक दुनिया से हाथ नहीं धो लेते, प्रभु की याद में न बैठो। क्योंकि जब तक वजू न कर लो, नमाज जायज़ नहीं। पहले दुनिया से हाथ-मुंह धो लो। हिन्दू भाइयों में कहते हैं, स्नान करके पूजा करो। ख्याल को हटाना सब तरफ से, यह असल स्नान है। आगे कहते हैं, ''नियम के नाखुन,'' नाखून बढ़ते हैं ना। फौज का कमाण्डर ही न हो तो फ़ौज तित्तर-बित्तर हो जायगी ना ! क्यों साहब ? तो कमाण्डर है नियम। जो, 'वक्त के ऊपर लड़ मुए,' गुरूवाणी में आता है। वक्त पर नौकरी बजाओ। भजन का वक्त है, बैठ जाओ। ड्यूटी का वक्त है, ड्यूटी दो। We are adrift. हम बह रहे हैं। कभी किया कभी न किया, कभी बैठे, कभी न बैठे। अगर एक वक्त मुकर्रर कर लो प्रभु की याद का, जब वह वक्त आए तो अपने आप चित्तवृत्ति उस तरफ लगेगी। कोई ठिकाना मुकर्रर कर लो कि उसमें सिवाय प्रभु की याद के कोई काम नहीं होगा। जब जाओगे ख्याल लगेगा। यह हमारी Practical difficulties (व्यावहारिक कठिनाइयां) हैं। तो जत की जटा बना लो। ब्रह्मचर्य की रक्षा है पहले। जपजी साहब में सारा उपदेश देकर कहते हैं -

जत पहारा, धीरज सुनियार।

सुनार की दुकान में पहारा होता है। वह न हो तो सोना कहां गलाए। धीरज, Patience, लगे रहो, धीरज न हो तो दो दिन किया, फिर कुछ न बना तो छोड़ दिया। यह नहीं। लगे रहो। इसका कुछ मतलब है। Blessed are the pure in heart for they shall see God. उसको कौन देख सकता है ? जिसका हृदय पवित्र है। योग का मज्जन और नियम - यह तीन चीजें धारण करो। रात को जंगल समझो। फिर देखो। कितना अच्छा प्रोग्राम है। किसके लिये है यह प्रोग्राम ? सब मनुष्य जाति के लिये। संन्यास आसा-मनसा के सुन्न हो जाने का नाम है। किसी भेस का नाम संन्यास नहीं। असल बात यह है कि अगले ज़मानों में सच्ची ब्रह्मचर्य की रक्षा होती थी। 25 वर्ष तक बाहर जंगल में आश्रम में रहकर वेदों-शास्त्रों के ज्ञाता होने के बाद गृहस्थ आश्रम में आते थे। एक-दो बाल-बच्चे हुए तो जंगलों की राह लेते थे - वानप्रस्थ। वहां वह उस हकीकत को पाते थे। जो पा लेते थे फिर (संन्यास लेकर) जगह-जगह फिरकर लोगों को

चिताते थे। आजकल तो पेट प्रचार है। ''किसे खोती वाही किसे ने पोथी वाही।'' यह हालत बन गई है। तो घर को जंगल बनाओ। जो घर में रहकर उदास है वह गंगा के निर्मल जल के समान है। रोज स्नान करो, प्रभु से जुड़ो। वह (प्रभु) रह जाए या तुम। यह स्नान है असल। और नियम। और क्या करो ?

ज्ञान गुरू आतम उपदेशो नाम विभूत लगाओ।

ज्ञान गुरू, गुरू से जो ज्ञान का अनुभव मिलता है। ज्ञान किसको कहते हैं ? पढ़ने-लिखने-विचारने का नाम ज्ञान नहीं। ''ज्ञान ध्यान धुन जानिये अकथ कहावे सोय।'' अन्तर में ध्वनि, नाद, जो Music of the spheres या उदोगीत हो रहा है, उसके अनुभव करने का नाम ज्ञान है। वह कौन देता है अनुभव ? ''धुन आने गगन ते सो मेरा गुरूदेव।'' फिर क्या कहते हैं ? ''गुरू ज्ञान अंजन सच नेत्री पाया, अन्तर चानन अज्ञान अंधेर वंजाया।'' गुरूमुख भक्ति क्या है ? ''गुरूमुख भक्ति करो सदप्राणी, हृदय प्रगास होय लिव लागे।'' यह गुरू का ज्ञान है, अन्तर में जो प्रकाश हो रहा है उससे जुड़े। तो कहते हैं ''ज्ञान गुरू आतम उपदेशो नाम विभूत लगाओ।'' विभूत क्या है ? रोम-रोम में प्यार आता है कि नहीं ? उसका अनुभव मिलेगा, ठंडक आएगी। तो कहते हैं ऐसा संन्यास करो। कोई ज़िक्र किया है किसी समाज का इसमें ? ''महापुरूष साखी बोलदे सांझी सकल जहाने।'' जो ख़ालसा बनाया उसका मतलब था Ideal Man (आदर्श पुरूष) बनाए। समाजों के लेबल तो पीछे लगाए। सिख समाज भी जो है हमारा, यह लेबल लग गया है। जानने वाले बहुत कम हैं। हैं, मगर विरले।

अल्प आहार सुल्पसी निद्रा दया क्षमा तन प्रीत।

इसके लिये कौन सी मददगार चीजें हैं दुनिया में ? अल्प आहार। कम खाओ। हजरत मोहम्मद साहब कहते हैं, भूख से एक लुकमा (ग्रास) कम खाओ। शेख सादी साहब कहते हैं, पेट का आधा हिस्सा रोटी से भरो, चौथा हिस्सा पानी से और चौथा हिस्सा खाली रहने दो। स्वामी जी महाराज फ़रमाते हैं, जो शब्द का रस लेना चाहता है वह एक वक्त खाए। हम खाते हैं खूब। क्यों साहब ? तो नींद किसके घर जाए ? संयम का खाना होगा वक्त पर उठोगे भी। ''सुल्पसी निद्रा।'' और थोड़ी नींद। चेतन आदमी हो जाता है, जिस्म तो सोता है, वह नहीं। हजरत मोहम्मद साहब से सवाल किया गया, आप सोते हो कि नहीं ? कहते हैं, मेरा जिस्म सोता है, मैं नहीं सोता। समझे।

''तन में खुफ्त न कि जाने मन।'' आत्मा तो चेतन स्वरूप है भई। Withdraw करके (सिमट कर) आम हालत (सामान्य अवस्था) में सुरति या आत्मा कण्ठ में आती है तो इन्सान सपने देखता है और नाभि में आती है तो गहरी नींद सो जाता है। वह (महात्मा) चैतन्य रहते हैं। वह जागते में सोते हैं, दुनिया की तरह, सोते में जाग रहे हैं। यह है आदर्श। तो यह चीजें मददगार हैं, कम खाना, थोड़ी नींद। और क्या ? दुनिया के मुतल्लिक, तीन चीजें और, ''दया, क्षमा, तन प्रीत।''

दया धर्म का मूल है पाप मूल अभिमान। तुलसी दया न छोड़िये जब लग घट में प्राण।

दया करना सीखो। दया किसको कहते हैं ? घर पर तो दया, दूसरों पर दया नहीं ? साथ के भूखे मर रहे हैं, तुम खा रहे हो। दया कहां हुई ? दया वहां भी होनी चाहिये। अपना बीमार है सख्त, दूसरा भी बीमार है। दूसरे को पहले Preference दो, फिर अपने को दो। दशम गुरू साहब के सब लड़के मारे गए तो माता पूछती है, ''मेरे बच्चे कहां हैं ?'' तो कहते हैं, ''इन पुत्रन के सीस पर वार दिये सुत चार।'' दया है न दूसरों के ऊपर। अपना सर्वस्व वार दिया। उन्होंने कोई तख्त बनाया माफ करना ? कोई जायदाद बनाई ? क्यों भई। कहते हैं यह सारे मेरे बच्चे हैं। यह सारे महापुरूषों की वाणी में है जो प्रभु की तरफ गए।

क्राइस्ट (इशु-मसीह) बैठा था। उसकी माता पीछे से आ गई। कहने लगे (लोग) तुम्हारी माता आई है। कहने लगे, यह सब मेरी माताएं हैं। यह आदर्श रहा सारे महापुरूषों का। वह चले गए तो पीछे लिखी हुई किताबें रह गईं। लेबल लगा लिये जिसके लिये हम झगड़ते रहते हैं। तो दया, पहली बात। दूसरी बात क्षमा। किसी का कसूर है, तुम माफ़ कर दो। लोग Justice चाहते हैं, कि इंसाफ़ (न्याय) होना चाहिये। इंसाफ़ में याद रखो दिल से कदूरत (मैल) नहीं जाती। मेरे अपने जीवन का वृत्तांत है। मेरी घर वाली आ रही थी। स्टेशन पर किसी जेब कतरे ने बटुवा निकाल दिया। मैं लेने गया था स्टेशन पर। वहां जो सिपाही पहरा दे रहे थे उन्होंने देखा। पता जो लगा, उसने फेंक दिया बटुवा। सिपाही थाने ले गया उसको। मुझे कहने लगा, तुम भी चलो। मैंने कहा, मैं क्या करूंगा ? मिल तो गई चीज ? कहने लगा, यहां रोज चोरी होती है।

खैर वहां गए, थाने में। घन्टा भर बैठे, किसी ने पूछा तक नहीं। मैंने वहां थानेदार से कहा, मैं तो जाता हूं। I am not concerned with this. बटुवा भी तुम ही रखो। मुझे

नहीं चाहिये। उसने मेरा बयान रिकार्ड किया। फिर कोर्ट में गए। पहले दिन सारी जिन्दगी में गया कोर्ट में। मेरे पास थानेदार बैठा था। कहने लगा, इंसाफ़ होना चाहिये। मैंने कहा, भई इंसाफ़ भी है और रहम भी। दो चीजें हैं। दीवे के नीचे अंधेरा होता है और बल्ब के ऊपर अंधेरा होता है। इन्साफ में दिल से कदूरत नहीं जाती। रहम में धोई जाती है। अब वह चोर जो था ना, वह कहे, यह सरदार साहब तो छोड़ते हैं, यह (पुलिस वाले) नहीं छोड़ते। दया हो तो क्षमा हो, दया न हो तो क्षमा कहां ? बच्चा गन्दा हो जाए तो क्या करते हैं। मार देते हैं ? ख़ैर मैंने जज से कहा, Well judge ! if you can find any way to let him off I have no objection (यदि तुम इसको किसी तरह छोड़ सको तो मुझे कोई आपत्ति नहीं)। ऐसी बात है ? जज ने पूछा। मैंने कहा, हां। फिर उसने पुलिस से पूछा कि इसके खिलाफ कोई और मुकद्दमा है ? कहते हैं, नहीं। उसने कहा, इसे वारनिंग देकर छोड़ दो। अब वह जहां जाए यह कहे कि यह न होते तो हम पकड़े गए थे। एक ही क्षमा से कितना मुसलमानों पर असर पड़ा। दया मन में न हो तो क्षमा कहां ! ऊपर से कहता है, जी, कोई बात नहीं। दिल में कहता है इसकी जड़ें काट दो। एक और चीज़ - प्रेम। प्रेम परमात्मा है। आत्मा उसकी अंश है। यह भी प्रेम का स्वरूप है। इसकी प्रकृति है, कहीं न कहीं लगकर रहेगी। इसने जागती ज्योति के साथ लगना था, लग गई दुनिया के साथ। दशम गुरू साहब ने सब समाजों का जिक्र करते हुए कहा -

साच कहूं सुन लेहो सबै, प्रेम कियो तिनही प्रभ पायो।

और महात्माओं ने भी यही कहा है। कबीर साहब कहते हैं, ''कर साहिब सों प्रीत रे मन कर साहिब सों प्रीत।'' और, Those who do not know love cannot know God. हम पूजा-पाठ क्यों करते हैं ? कि हमारे अन्तर में प्रभु का प्यार जागे। और किस लिये करते हैं ? सूखी नमाज पढ़ी, पूजा की, बातें कीं, भोग पड़ा, खत्म हुआ। चलो भई तुम कौन। तो ''अल्प आहार सुल्पसी निद्रा, दया क्षमा तन प्रीत।'' यह गुण होने चाहिये। और क्या हो ?

सील सन्तोख सदा निंवहिबो होईबो तृगुण अतीत।

शील को धारण करो। शील, अर्थात् पवित्रता। और साथ में सन्तोष। जितनी हैं इच्छाएं बनीं उस पर खड़े हो जाओ। कहीं तो खड़े हो जाओ। देखो कि यह चीज़ें कहां तक तुम्हारी जायज़ बनी हैं। आगे कहां जाओगे ? तुम्हारे साथ क्या जायेगा ? खड़े हो

जाओ, तभी सोचोगे ना, कहां जा रहे हो ? हम मारोमार जा रहे हैं। होश ही नहीं क्या करना है ? तो कहते हैं संतोष से सब के साथ गुज़ारा करो, तृगुणातीत अवस्था को तुम पा जाओगे। अगर यह Qualifications (गुण) होंगी तो तृगुणातीत अवस्था को तुम पा जाओगे। भगवान कृष्ण ने इशारा दिया है गीता में कि हे अर्जुन, तीन गुणों के पार चल। पिण्ड, अण्ड, ब्रह्मण्ड में चक्कर काटते रहोगे। जब तक इससे परे नहीं जाते काम नहीं बनता। अपने व्यवहारों में शील और संतोष को धारण करो।

काम क्रोध अहंकार लोभ हठ मोह न मन सों लियावे।

और खोल रहे हैं। काम क्या है ? ''जेती मन की कल्पना, काम कहावें सोय।'' कामना विहीन हो जाओ। कामना में रूकावट कोई बने तो वह क्रोध। हमारी कोई कामना हो, उसमें ज़ाहिर या दरपरदा कोई रूकावट हो तो क्रोध आ जाता है कि नहीं ? क्रोध क्या है ? तुम्हारी इच्छा में रूकावट का बनना। है वह कामना ही। आगे अहंकार है, मैं ने जरूर लेना है, मेरी हेटी हो जाए ? ''पाप मूल अभिमान।'' सब पापों का मूल अभिमान है, मैं-पना। और कहते हैं, हठ को छोड़ दो। 'यह ठीक है, इसी को Way out (सिद्ध) करना है' - यह छोड़ दो। पूछो, वह क्या कहता है ? सुनो, शायद वह ठीक ही कहता हो। यह जकड़ है जकड़। एक होती है बाहर की जकड़, उसका त्याग करो। एक होती है दिल की जकड़, उसको Change करो। किसी सिद्धान्त को, गलत या सही हो, सिद्ध करना - यह छोड़ दो। और मोह। मोह का सवाल ही नहीं। जिस्म छोड़ना है, लेना-देना खत्म करो।

कामना में रूकावट बने तो कहता है मैंने जरूर लेना है। पानी चल रहा हो ना नाली में, उसमें पत्थर डाल दो तो टकारायेगा। उसमें दो चीजें बनेंगी, एक झाग, दूसरे शोर। जब क्रोध आ जाये तो इंसान आहिस्ता नहीं बोल सकता, ऊंचा ऊंचा बोलता है। और बोलते हुये मुंह में झाग आ जाती है। मिल जाये चीज तो मोह बन जाता है। उसको छोड़ना नहीं चाहता। और हठ को छोड़ दो।

तब ही आतम तत को दरसे परम् पुरख को पावे।

कहते हैं तभी परमात्मा के दर्शन तुम कर सकते हो। तो सबसे बड़ी चीज़ है प्रेम। (पाठी से) बैसाख का महीना ले लो भई। महीना भी सुन लो। रोना तो एक ही रोया जायेगा।

बैसाख धीरन क्यों वाढिया जिनां प्रेम विछोह।

परमात्मा प्रेम है। आत्मा की ज़ात (अस्तित्व) में प्रेम है। उसमें कुदरती प्रभु से मिलने का भाव है। अगर वह (आत्मा) बाहर से हटे तो कुदरती तौर पर उधर जायेगी। बाहर से कैसे हटे ? ''गुर गृह बस कीना हौं घर की नार।'' गुरू ने इस घर को मेरे कंट्रोल में कर दिया है। मैं इस घर की रानी हूं रानी। कहते हैं कितनी नौकरानियां मिलीं ? कहते हैं, ''दस दासी कर दीनी भतार।'' पांच कर्म इन्द्रियां मिलीं, पांच ज्ञान इन्द्रियां । यह मेरे हुक्म पर चलती हैं। तो हमारी ज़ात में प्रेम शामिल है प्रेम। इसका गुण है अपने प्रीतम से जुड़ना। आत्मा, परमात्मा से जुड़ना चाहती है। क्योंकि देखा नहीं, बाहर दुनिया से लग रही है। इसको संतुष्टि नहीं होगी जब तक यह अपनी ज़ात से न मिले। ''बैसाख धीरन क्यों'' कहते हैं बैसाख का महीना आ गया है, फसल कटी पड़ी है तुम्हारी, प्रभु से दूर पड़े हो, तुम्हें धीरज कैसे आ सकता है ? प्रेमी चाहता है प्रीतम से मिलना। अरे तुम कैसे जी सकते हो ? तुम्हें कैसे धीरज आ सकता है उसके बग़ैर। तुम उससे कटे पड़े हो, कैसे तुम जीवन गुज़ार रहे हो ? कहते हैं, कैसे भूल गये तुम ? आगे बयान करते हैं।

हर साजन पुरख विसार के लगी माया धोह।

कहते हैं परमात्मा से दूर हो गये हम, उसे भूल गये, और माया हाथ धोकर हमारे पीछे लग गई। माया नाम है भूल का। यह भूल कहां से शुरू हुई ? ''इह शरीर मूल है माया।'' हम देह धारी हैं ना, देह नहीं। मगर देह का रूप बन रहे हैं। बड़ी भारी भूल है यह। ''मोह माया सबो जग सोया यह भरम कहो किंव जाई।'' तो कहते हैं तुम कटे पड़े हो प्रभु से। तुम्हारी ज़ात प्रेम है। प्रेम चाहता है प्रभु से मिलना। उससे मिले बिना तुम्हें धीरज कैसे आ सकता है ? रूकावट क्या बन रही है ? माया हाथ धोकर तुम्हारे पीछे लग गई है। भूल में फंस गये। अब सवाल आता है, हमने देखा ही नहीं उसको। भूला हुआ अगर सामने आ जाये तो फिर जाग उठता है ना प्यार ? वह प्यार किसी और जगह, गलत जगह लग गया, दुनिया के साथ। वह दीन-ईमान बन गई। नतीजा क्या ? जहां आसा तहां वासा। बस।

यह दर्द भरी कहानी है। फसल तो बाहर कटी पड़ी है। महात्मा देख कर कहते हैं तुम उस प्रभु से कटे पड़े हो। तुम्हारी ज़ात में प्रेम है। तुम उसकी अंश हो। मालिक को भूल गये। इसलिये कहते हैं प्रभु को भूलना जो है, यही सब खराबियों की जड़ है। ''परमेश्वर

ते भुल्लेयां व्यापन सब्बे रोग, बेमुख होये राम ते लग्गे भरम वियोग।'' यही बात है। तो कहते हैं, ''हर साजन पुरख विसार के'' - साजन किसको कहते हैं ? ''आदि, मध्य, जो अन्त निबाहे, सो साजन मेरे मन भावे।'' कौन ? परमात्मा। वह हमारा जीवन आधार है। उसको हम भूल गये।

पुत्र, कलित्र, न संग धना हर अविनाशी ओह।

पुत्र है, स्त्री है, बच्चे हैं। यह प्रारब्ध कर्मों के अनुसार प्रभु ने जोड़े हैं। खुशी से लेना-देना निभाओ। जिनको मालूम है, वह कहते हैं। हां भई ले। चल। मालूम नहीं, इसलिये मुश्किल बनी पड़ी है। तो कहते हैं, बाल-बच्चे, स्त्री, यह वह, यह ''पूर्व जन्म के मिले संयोग।'' यह हमेशा साथ नहीं रहेंगे। लेना-देना खत्म हुआ सब अपने राह। ''कौन काहू को मीत जगत में झूठी देखी प्रीत। सब कोऊ अपने सुख को लागे क्या दारा क्या मीत।'' खुशी से लेना-देना निभाओ और अपने घर जाओ। रूपया-पैसा जायदादें भी यहीं रह जायेंगी। किसके साथ गईं। लाखों वाले लाखों छोड़ गये, करोड़ों वाले करोड़ों - ''पापां बाझों होये न कठ्ठी ते मोयां नाल न जाई।'' कौन जायेगा साथ ? ''हर अविनाशी ओह।'' वह परमात्मा, जो हमारी आत्मा का संगी और साथी है। वह तुम्हारे साथ जायेगा। जिसकी उसके साथ बन आई वह उसकी गोद में जायेगा। जिसका दुनिया में प्रेम उलटा लग गया वह दुनिया में आ गया, ख्वाह यहां दुनिया का प्रेम है, परलोक का है, कहीं का है। ब्रह्मण्ड में चक्कर खायेगा। यह किनको उपदेश है ? सब मनुष्य जाति को। यही चीज़ है जो हम भूल रहे हैं। समाजें इसलिये बनाई कि हम समझें। मैंने इसीलिये यहां कोई समाज नही बनाई। समाजें आगे थोड़ी हैं ? चीज़ को समझो। सारे महापुरूष पुकार-पुकार कर कहते हैं, मगर हम सुनते नहीं। बनावटों में लगे रहते हैं। वही स्कूल अच्छा जिसमें बहुत लड़के इस गति को पा जायें।

पलच पलच सगली मुई झूठे धन्धे मोह।

एक होता है काम, एक होता है धन्धा। धन्धे का नाम है चेष्टा, ग्रन्थी, बन्धन कहो। काम नहीं बुरी चीज़ है। एक काम छोड़ जाओ, खिंचा रहे, यह करना है, वह करना है - यह छोड़ दो। जो करना है करो। ''झूठे धंधे मोह।'' झूठे, जो साथ नहीं जाने वाले, उसमें खिंचा पड़ा है, मोह में फंस रहा है। उसका नतीजा ? ''जहां आसा तहां वासा।'' बार-बार दुनिया में आता है। प्रभु अविनाशी से जुड़ो। यह चीज़ें तो बदल जाने वाली

हैं । ''नदरी आवे तासों मोह, इब क्यों मिलिये प्रभु अविनाशी तोह।'' कि जो कुछ नज़र आ रहा है उससे हमारा मोह लगा पड़ा है। हे प्रभु, यह नाशमान चीज़ें हैं। जो नाशमान चीज़ों में सुरति लगी पड़ी है, तू अविनाशी है, तेरे साथ कैसे जुड़ सकती है ? ''साई दा की पावणा, इधरों पटना ते उधर लावणा।'' बाकी लेना-देना खुशी से निभाओ। प्रभु ने जोड़ा है ना ! लेना-देना खत्म करके सब अपने घर की राह लो। जिसने पहले खत्म कर दिया वह पहले चला जाये, जिसने पीछे वह पीछे चला जाये। सारी दुनिया इसी में पच-पच कर मर जाती है।

एकस हरि के नाम बिन अग्गे लइये खोह।

हरि का नाम, परिपूर्ण परमात्मा का नाम जो है - ''नाम के धारे खण्ड ब्रह्मण्ड।'' जो खण्डो-ब्रह्मण्डों को लिये खड़ा है, उससे लगे बिना अगला जीवन बरबाद कर देता है, यहां आने का सामान कर लेता है। What profits a man if he gains possessions of the whole world and loses his own soul ? सारी दुनिया के मालिक बन गए अगर वह (प्रभु) नहीं मिला तो क्या है ? यहां की चीज़ों का सामान करते रहे बार-बार आने का सामान करते रहे। मानुष जन्म पाया था प्रभु को पाने के लिये। जिसने पाया है, उसकी सोहबत से तुम भी पा सकते हो। ''सत्गुरू मिले तां अख्खीं वेखे।'' उसके महारस को पाने से सब दुनिया के रस दिल से निकल जाते हैं। ''जब उह रस आवा इह रस नहीं भावा।'' इस तरह हम दुनिया में फंस रहे हैं। हम यह परवाह ही नहीं करते कि एक दिन मरना है। मरना है तो मर जाएंगे। अब तो, ''खाओ-पीयो, मजे करो।'' अक्लमंद वह है जो Foresight से (पारदर्शी दृष्टि से) काम ले, ''दे लम्मी नदर निहारिए।'' देखे कि इसका हशर क्या है ? जो हमेशा साथ रहे उसकी तरफ कोई तवज्जो नहीं, जो क्षणभिंगुर है, लेना-देना है, वह दीन-ईमान बन गया।

दई विसार विगुच्चना प्रभु बिन अवर न कोय।

दई कहते हैं परमात्मा को। उसको भूल कर जन्म तुम बरबाद कर रहे हो। ''प्रभु बिन अवर न कोय।'' प्रभु के बिना तुम्हारी आत्मा का कोई साथ नहीं। इसी लिये कहा, ''सन्त जनां मिल भाइयो सच्चा नाम संभाल, तोशा बांधो जिया का एथे ओथे नाल।'' दोनों जहानों का तोशा है। यहां भी, मरकर भी। उधर तवज्जो नहीं करते। पहले कहा ना, ''बैसाख धीरन क्यों'' तुम प्रभु से कटे पड़े हो, वहां वापस जुड़ने का सामान करो।

तुम और दूर जा रहे हो। महापुरूषों की वाणी विचारने के लिये है। बड़ी भारी Basic (मूलभूत) चीज वह पेश करते हैं।

प्रीतम चरणों जो लगे तिन की निर्मल सोहे।

कहते हैं दुनिया में रहकर जिन्होंने घर को जंगल की तरह समझा है, जिनकी प्रभु प्रीतम से लौ लग गई, उनकी सोह (समाचार) सुनकर भी खुशी होती है। देखो दुनिया में कोई ऐसा है, जो उसको पा गया है। जो पा गया, उसकी Guidance (मार्ग दर्शन) से हम भी पा सकते हैं। कुदरती बात है। जिधर देखो, ''सभी भुलानो पेट के धंधा।'' कबीर साहब कहते हैं। आलम-फ़ाज़िल, ग्रन्थाकार, यह वह, प्रचारक भी। आगे क्या कहते हैं।

नानक की प्रभ बेनती प्रभ मिलो प्रापत होय।

कि जो प्रभु को पा गए उनकी सोह सुनकर बड़ा चित्त प्रसन्न होता है। हे प्रभु, हमें भी अपने चरणों में ले लो। प्रार्थना कर रहे हैं। प्रार्थना आखिर कबूल होती है। जो दिल से मांगोगे, प्रभु देगा ना। ''पिता कृपाल आज्ञा इह कीनी, बारक मुख मांगे सो दीना।'' (गुरबाणी) ''बन्दा जो मुझ से मांगेगा मैं उसे दूंगा।'' यह कुरानशरीफ़ कहता है। कहते हैं जो पा गए हैं उनसे मिलकर हम भी पा जाएं। आगे मतलब की बात कहते हैं।

बैसाख सुहावा ताँ लगे, जां सन्त भेंट हर सोहे।

बैसाख का महीना तब सफल होगा, नई ज़िन्दगी का आरंभ जो हो रहा है तभी सफलता को पाओगे, जिसने पाया है, उसकी सोहबत (संगति) मिले। मिलने से नहीं, भेंटने से। मिलना और भिटना, दो पंजाबी लफ्ज़ है। मिलना तो हुआ खाली मिलना। भेंटना है, दिल दिल को राह बनना, Receptive होना। ''सन्तन संग हमरी लेवा देवी सन्तन संग ब्योहारा।'' अगर ऐसा महात्मा भेटया जाए। ''दर्शन भेटत पाप सब नासें'' कहते हैं बैसाख का महीना है। नई ज़िन्दगी की शुरूआत है। कोई सन्त मिल जाए तो काम बन जाए। तो निकला है वही इस भूल से निकालेगा, जो जुड़ा है प्रभु से, वहीं हमको जोड़ेगा। ''सन्त संग अन्तर प्रभु डीठा।'' और, ''सन्तन मोको पूंजी सौंपी।'' वह बैठाकर उसकी, सत् की, पूंजी देगा। लोग कहते हैं महीना सुन लो। सुनने से मुक्ति नहीं, करोड़ बार सुन लो। जो लिखा है उसको न करो तो क्या है ? लोग खाली सुनने का महातम समझते हैं। सुना है, समझो। उस पर अमल करो। तब तो फ़ायदा है। सुन भी लिया,

जीवन वैसे है, ''वही है चाल बेढंगी जो पहले थी सो अब भी है।''

तो यह बैसाख का महीना था। यह उसकी शिक्षा है, किसी समाज में रहो। हरेक महापुरूष ने यह महीने कहे हैं। गुरू अर्जन साहब ने, गुरू नानक साहब ने उच्चारण किया है। बुल्हेशाह ने भी किया है। सारे महापुरूषों ने अपनी-अपनी जगह किया है। मतलब यह कि लोग किसी तरह समझ जाएं। आखिर क्या कहते हैं, कि हमारे यह कुछ कहने का मतलब सिर्फ लोगों को समझाना है। बस। बारह महीनों का उपदेश देकर आखिर यह कहते हैं। हरेक महीने में महात्मा की महिमा गाई है कि उसके बिना गति नहीं। आखिर क्या कहते हैं ? मैं अभी सुना देता हूं ताकि भ्रम न रहे।

जिन्नी जिन्नी नाम ध्याइया तिनके काज सरे।

कि जिन्होंने नाम को ध्याइया उनका कार्य संवर गया। और ?

हर गुरू पूरा अराधिया दरगह सच खड़े।

जिनको पूरा गुरू मिल गया, हरि का रूप जो था, वह मालिक की दरगाह में शोभा पा गए।

सर्व सुखां निधि चरण हर भौजल बिखम तरे।

सुखों का समुद्र मिल जाएगा उनको, संसार सागर से तर जाएंगे और ?

प्रेम भक्ति तिन पाइया बिखिया नाहिं जरे।

प्रेमा भक्ति उनके अन्दर जाग उठेगी। दुनिया की, माया की ज़हर उनको असर नहीं करेगी। प्रेमी को कोई नहीं पता कौन आया कौन गया। हज़ारों में वह एकान्ती है, हज़ारों में वह वैरागी है।

कूड़ गए दुविधा नसी पूरण सत परे।

नाशवान दिल से हट गया। कूड़ नाशवान को कहते हैं, ''कूड़ राजा, कूड़ प्रजा'' - ''कूड़ कूड़े नेह लग्गा विसरिया कर्तार, किस नाल कीजे दोस्ती सब जग चल्लन हार।'' कहते हैं कूड़ (नश्वर) निकल गया दिल से, ''दुविधा नसी।'' दो चिती नहीं रही। जब देखा कि वही सब में है, आंख खुल गई सन्त की कृपा से, ''पूरण सत परे।'' पूर्ण सत्

को पा गए।

पारब्रह्म प्रभ सेवन्दे मन अन्दर एक धरे।

एक ब्रह्म है एक पारब्रह्म है। ब्रह्म तक माया है। ब्रह्म से पार जाना है, तीन गुणों के पार। उस आनंद में इन्सान लीन हो जाता है।

माह दिवस म्हूरत भले जिनको नदर करे।

वही महीना, वही दिन, वही महूर्त अच्छा है, जिन पर मालिक दया करे। महीना सुनने से नहीं, जो मालिक की नज़र करके पा गया, सन्तों की कृपा से उसका जीवन सफल है।

नानक मंगे दरस दान कृपा करो हरे।

कहते हैं, हे प्रभु ! हम यही दान मांगते हैं कि तेरा दर्शन नसीब हो। मानुष जन्म पाकर यह हमारा Ideal (आदर्श) है। आज बैसाखी का दिन है। आपने समझा, क्या करना है ? क्या कर रहे हो ? जगती ज्योति के पुजारी बनो, उसके दास बनो। और किसी को आंख में न लाओ। बाकी सब बदल जाने वाले हैं। जिनके अन्तर रोशनी आई, वह रोशन कर गए दुनिया को। उनकी तालीम को कायम रखने के लिये यह समाजें बनीं। जो उनमें जाग उठे हैं उनकी कद्र करो। तालीम वही है। Truth is one (सत्य एक है)। और उसके लिये True living (सच्चा सुच्चा जीवन) चाहिये। Truth is above all, true living is still above Truth.

अर्थात् सत् सबसे ऊपर है, पर सदाचार सत् से भी ऊपर है। बड़ा अच्छा प्रोग्राम दिया है, दशम गुरू साहब ने। आख़िर कहते हैं, महीनों दिनों से हमारी मुराद यह है कि जिसमें उस प्रभु को पा गए वह महीना, वह दिन, वह महूर्त मुबारक है।

✦ ✧ ✦

(1)

न मैं सुन्दर न गुण पल्ले, ते मैं कीकण पिया रिझांवां ।
न छाती ताण, न माण हिये विच, ते मैं कीकण शोह गल लांवां ।
न दिल जोश हुलारे खांदा, प्रेम न कस्से तणांवां ।
न सिक मिलण दी न हुब दिले विच, फिर क्यों कर उस नूं भांवां ।
आखो सइयो मैंनूं सब्बे कुकर्मण, नी मैं न लईयां इश्क दियां लांवां ।
हाय कोझी मैं कोझ कमाया, किवें, कोझी उसनूं भांवां ।
न सुख चैन न रैण विहावे, हौं सुतड़ी ही सो जांवां ।
जे माही मैंनूं इश्क चवांती, लगे तां लोड़ां झबे झबे ।
उत्ते त्तले अन्दर बाहर, ओह दिस्से सज्जे खब्बे ।
माये भाग मंगां मैं किसदे, हाय दिल चाओ करेंदा हब्बे ।

(2)

आपणे पिया दे कोल हाय वे, असां जाणां ज़रूर ।
नदी ठाठां पई मारे, पार बैठा सजण पुकारे ।
दिल रहंदा नां मूल, हाय वे असां जाणां ज़रूर ।
सोहणी प्रेम दी मारी, होके व्याकुल भारी ।
डाहडी इश्क विच चूर, हाय वे असां जाणां ज़रूर ।
ला के सिरो सिर बाज़ी, बण के प्रीतम दी मैं दासी ।
मेरा कोई नाहीं होर, हाय वे असां जाणां ज़रूर ।
छड के दुनियां दे हासे, कीते उस फुल पतासे ।
अपणी जिन्दड़ी नां रोल, हाय वे असां जाणां ज़रूर ।
ला के प्रीत दी डोरी, कदी न सी उह डोली ।
पहुंची आख़िर प्रीतम दे कोल, हाय वे असां जाणां जरूर ।
मैं वी आई दर तेरे, पान्दी जोगण दे फेरे ।
मेरी जिन्दड़ी नां रोल, हाय वे असां जाणां ज़रूर ।
पिया दर तेरे दी दासी, होईयाँ सख़त उदासी ।
हुण तां दरों नां मोड़, हाय वे असां जाणां ज़रूर ।
'सावन' तेरे जेहा न कोई, मालिक तेरे बाझ न कोई ।
इक वारी तां बोल, हाय वे असां जाणां ज़रूर ।

(3)

चलो नी सइयो सरसे नूं चलिये ताँघाँ सोहणे यार दियां ।
आप सदा मालिक संग रहन्दे, रात-दिने असी दुःखड़े सैहन्दे ।
बेहरे ग़मां विच हरदम वैहन्दे, आर दियाँ न पार दियाँ ।
चलो नी सइयो सरसे नूं चलिये .....

भागे भरियां रूहां तेरियां, नाल तेरे जो हरदम रहियाँ ।
असां मुसीबतां लख-लख सहियां, बैठ गीटियां गालदियाँ ।
चलो नी सइयो सरसे नूं चलिये .....

पूरी आस उम्मीद ना होई, हद्दों बाहर बैठ मैं रोई ।
तैं बिन प्रीतमा जीवन्देयां मोई, जान तेरे तों वारदियाँ ।
चलो नी सइयो सरसे नूं चलिये .....

पाके गल्लां-गल्लां विच दुःखड़ा, जग सारा पेया दिस्से रूखड़ा ।
जल्दी आन विखाओ मुखड़ा, भुखड़ी तेरे दीदार दियां ।
चलो नी सइयो सरसे नूं चलिये .....

तूं मालिक मैं बान्दी तेरी, दर्शन पिया दईं इक वेरी ।
जल्दी करीं नां लावीं देरी, भुखड़ी तेरे दीदार दियां ।
चलो नी सइयो सरसे नूं चलिये .....

कित्थे गयों हाय सावन प्यारे, बन्दी रो-रो उमर गुजारे ।
गिणनियां रात बैठ मैं तारे, दिन तक तक राहां गुज़ार दियां ।
चलो नी सइयो सरसे नूं चलिये .....

सौ-सौ वारी मैंनूं ख़्वाबाँ आइयां, भुल्ल गयों मैंनूं मेरे साईयां ।
पहले नाल मेरे क्यों लाइयाँ, गल्लां एह आज़ार दियां ।
चलो नी सइयो सरसे नूं चलिये .....

प्यारे सावन तेरे बिन मोइयां, दर्शन बिना मैं पागल होइयां ।
परदियों बाहर आ सावन रोइयाँ, गल्लाँ कर हुण प्यार दियां ।
चलो नी सइयो सरसे नूं चलिये .....

मैथों चंगियां जुत्तियां तेरियां, मैं तत्ती दूर पांवाँ फेरियां ।
हाय छेती आवीं ग़मां ने घेरियां, भुखड़ी सावन दीदार दियां ।
चलोनी सइयो सरसे नूं चलिये .....

(4)

आजा प्यारे सत्गुर आजा, अपनी सूरत मैंनूं वखा जा ।
सीधी-सादी सूरत तेरी, प्यारी प्यारी मूरत तेरी ।
चेहरा जल्वा रब्ब दा दिस्से, दिलनूं लुभावन वाले आजा ।
आजा प्यारे सत्गुर आजा ।

सोहणां मत्था चिट्टी पगड़ी, नूर चमके हर लिव लगड़ी ।
अखियाँ प्रेम प्याले भरियां, भरवट्टे नूर पलटे आजा ।
आजा प्यारे सत्गुर आजा ।

जुल्फ़ां तेरियाँ रेश्म तारां, नर इलाही दियां देन चमकारां ।
इक इक वाल सिरे दे उत्तों, दोवें आलम वारां आजा ।
आजा प्यारे सत्गुर आजा ।

मुखड़ा सुहावा सहज धुन बाणी, सुण-सुण पावां कन्त निशानी ।
रसीले बैण अत मिठड़ी बोली, मिटावन तपत हिरदे दी आजा ।
आजा प्यारे सत्गुर आजा ।

सुच्ची दाढ़ी छाती ते आवे, बग्गी हो हो नूर बरसावे ।
लाली नाम दी भा पई मारे, ग़रीबी सिखावण वाले आजा ।
आजा प्यारे सत्गुर आजा ।

(5)

पुछदी फिरां सइयो मैं, नित नित निशानी उस दिलबर दी।
जिसने लुट खड़ेया दिल मेरा, दसैओ मैं उस दिलबर दी।
तुसी सुहाग माणो रल सइयो, कराओ मेहर दिलबर दी।
बाझ तुहाडे पुच्छाँ मैं किस नूं, मन्ज़िल उस दिलबर दी।
पास पिया दे जा के कोई, आखे तेरे दर आई।
जान उस दी विच उडीकां, मुड़ है लबां ते आई।

(6)

मैं रोन्दी नूं छोड़ सदाये, मारे उसी बेदोसे।
मुट्ठी यार जिगर विच मुट्ठी, ते मैं कुट्ठी दिलबर उत्ते।
पिया बोल मुंह मैं घोल, घती बह कोल, मेरे घत पिहड़ा वे।
तोड़ मुहब्बत छोड़ ना जावीं, तोड़ चड़ावीं नेहड़ा वे।
नज़र मेहर दी कर मैं उत्ते, मेरा रहे उदासी जियड़ा वे।
हार सिंगार 'जमाल' न भावे, भठ पया चड़ा बीड़ा वे।

(7)

ऐहा करम करीं तू अपणा, या रब्ब मेरे ताईं।
इक दम विसरे याद न तेरी, मन जाय न होर किथाईं।
वल अपणे तू लै चल मैंनूं, राह भुल्ली मैं साईयां।
महफिल मेरी तूं कर ज़िन्दा, पा फेरा आपणा साईयां।
इस कुम्हलाये हिरदे ताईं, तूं कर ताज़ा आके।
प्रेमा भगती बख्श असानूं, भर दे जिन्द फिर आके।
नूरी बाटे इश्कां वाले, भर भर पीते जिस ने।
अपणा आप सजण विच पाके, ज़िन्दा कीता जिसने।
दिल ओह जो नाल पिया दे, नाम कमावण लग जावे।
ओह रूह जो चाह प्रेम दी, दिलबर कोल लै जावे।
झूठे वहम ख्यालां अन्दर, ऐवें उमर गुज़ारी।
'सावन' पीर तेरे दर आई, सुण मेरी याचना सारी।

(8)

वाह वाह यार नज़ारा तेरा ।
भोले भोले नी नैण रंगीले, मुखड़ा प्यारा-प्यारा तेरा ।
दिल नूं ढाहरस देवो साइयां, दूरों देख इशारा तेरा ।
वे मिट्ठियाँ नी गलां तेरियाँ, ते झूठा झूठा लारा तेरा ।
पा मैंनूं हुण खैर दरस दा, वे मैं बैठी मल्ल दुआरा तेरा ।
रवे सलामत हर दम साइयां, ओ बारियां वाला, चुबारा तेरा ।

(9)

गल कीती ते गल पई निभाणी लोड़िये ।
शमां दे परवाने वांगूँ जलदेयां अंग न मोड़िये ।
हाथी इश्क महावत रांझा, अंकुश दे दे होड़िये ।
सुण वे लोका मेरा होका, लगड़ी प्रीत न तोड़िये ।
दस्त विकाणी विकाणियां वे मैं, हुण उजर की रखां ।
भठ खिड़ेया दा गरी छुहारा, ज़हर रांझन दी खण्ड कर चखां ।
सुण याग गुमानियां वे, ऐनी गलीं सानू तारदा ।
नैणां दी नाव करे सो लंघे, डूंघा घाट प्यार दा ।
रात अन्धेरी गलियां चिक्कड़, मैं भरवासा यार दा ।
सुण प्यारेया रस भिन्ड़ा, डोलणा नदियों पार उतारदा ।

रूहानी सत्संग नि:शुल्क भेजे जाते हैं ।
Ruhani Satsangs are sent Free of Cost.